International Journal of Advanced Education and Research
www.alleducationjournal.com
ISSN: 2455-5746
Received: 16-06-2021, Accepted: 02-07-2021, Published: 17-07-2021
Volume 6, Issue 4, 2021, Page No. 16-17

माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा कार्य सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक योग्यता के प्रभाव

डॉ. पूनम मदान[1], रवि कान्त[2]
प्रधानाचार्या, डॉ. वीरेन्द्र स्वरूप इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेसनल स्टडीज़, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्रा, नॉर्थ ईस्ट फ्रन्टियर टेक्निकल विश्वविद्यालय, एलो, वेस्ट साइंग, अरूणाचल प्रदेश, भारत

सारांश
शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षा को व्यक्ति तथा समाज की आत्मा माना जाता है। शिक्षा से ही व्यक्ति समाज सभ्यता एवं संस्कृति का विकास सम्भव है। भारतीय मनीषा के प्रत्येक युग में शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। महादेवी वर्मा ने अपने लेख ''राष्ट्र के मेरूदण्ड'' में अत्यंत सही बात कही है कि शिक्षा संस्थानों में राष्ट्र बनता है यह बात स्वीकार करते है कि सुव्यवस्थित एवं सुसंस्कृत सम्पूर्ण विकास के लिए अच्छी शिक्षा परमावश्यक है। यह अत्यंत विचारणीय प्रश्न है कि भारतीय शिक्षा चाहे माध्यमिक माध्यमिक हो या उच्च हो, अध्यापक, उसे कैसे जीवनोपयोगी, जनोपयोगी तथा राष्ट्रोपयोगी बना सके तभी तो शिक्षा राष्ट्र निर्माण के महान उद्देश्य को पूरा कर सकेगी। आज शिक्षा एक समस्यात्मक स्थिति में चल रही है। यद्यपि लगता है कि आज हमने अनेक उपलब्धियाँ हासिल कर ली है, पर यदि निष्कर्षों पर ध्यान दिया जाय तो हमें लज्जित ही होना पड़ता है। इसीलिए भारतीय मनीषियों ने शिक्षक को परमेश्वर से बड़ा माना है श्वेताश्वतरोपनिषद में कहा गया है– ''यस्य देते पराभक्तितर्यथादेवे गुरो'' शिक्षा ग्रहण करने के लिए शिष्य को द्विज कहा जाता है जिसका तात्पर्य है दूसरा जन्म लेना।

मूल शब्दः मेरूदण्ड सोद्देश्य परमावश्यक राष्ट्रोपयोगी श्वेताश्वतरोपनिषद उपलब्धिया

प्रस्तावना
शिक्षक एक मूर्तिकार के समान है, जो प्राण रहित विद्यार्थियों रुपी मूर्तियों में नवीन ज्ञान रुपी प्रकाश उत्पन्न करता है। वह बालक के अविकसित मन को एक नये सांचे में ढ़ालकर नया रुप प्रदान करता है। वह समाज का निर्माता है। शिक्षक की अनुपस्थिति में हम शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की कल्पना भी नहीं कर सकते, क्योंकि शिक्षक ही शिक्षा के माध्यम से बालकों में विभिन्न गुणों का विकास करता है। शिक्षकों के निर्देशन में ही बालक वांछित गुणों के वशीभूत होकर समाज की उन्नति करता है। शिक्षक बालक को वह परिस्थितियां प्रदान करता है, जिसमें बालक स्वयं ज्ञान प्राप्त करता है और अपनें अन्तर्निहित ज्ञान का विकास करता है। इस प्रकार शिक्षक का कार्य बच्चों को स्व–अनुभवों एवं स्व–प्रयासों से ज्ञान प्राप्त करनें के लिए प्रेरित करना है। श्री अरविन्द शिक्षण प्रक्रिया को योग की संज्ञा देते हैं और ज्ञान प्राप्तकर्ता (बालक) को योगी मानते हैं। प्राचीन पाश्चात्य तथा भारतीय दार्शनिक रुसो, पेस्टालॉजी, फ्रोबेल, जान डीवी, डॉ0 मॉन्टेसरी, रसेल, टैगोर, विवेकानन्द, महात्मा गॉधी, अरविन्द, गिज्जु भाई, परमहंस योगानन्द आदि सभी विद्वान शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारते है। डॉ0 मॉन्टेसरी उसे मातृतुल्य व्यवहार करने वाले विवेकानन्द उसे आत्मज्ञानी, सदाचारी तथा शिष्यों के दिव्य स्वरुप को पहचानने वाला महात्मा गांधी उसे आदर्श व्यक्ति, ज्ञान का पुंज, पिता, मित्र, सहयोगी तथा पथ प्रदर्शक बताते हैं। वास्तविकता भी यही है कि शिक्षक ही राष्ट्र के भविष्य का निर्माता होता है। वह ही शिक्षार्थियों को सामाजिक परिवर्तनों तथा समाज के साथ जोड़ता है। इतना महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए शिक्षकों का अपनें कार्य से संन्तुष्ट होना अति आवश्यक है। यही कारण है कि विद्वानों ने शिक्षको की कार्य सन्तुष्टि पर अत्यधिक बल दिया है।

शिशु के जन्म के पश्चात् ही माता पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य उसे बोलने तथा माध्यमिक जानकारी देने का कार्य करने लगतें है। जब वह कुछ बड़ा हो जाता हैए इसके पश्चात् बालक तथा बालिकाओं को विद्यालयों में प्रवेश दिलाया जाता है विद्यालयों में गुरुजनों द्वारा सुनियोजित ढंग से शिक्षा प्रदान की जाती है। विवेकानन्द के अनुसार–*Education is the manifestation of the perfection already reached in man*
बिना शिक्षा के मनुष्य के भीतर छिपे गुणों का पूर्ण रुप से प्रकाशन सम्भव नहीं है। प्राचीन वैदिक काल में मनीषियों ने शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि–"सा विद्या या विमुक्तयै" अर्थात् शिक्षा वह है, जो इस संसार रुपी भवसागर से मनुष्य जाति को मुक्ति प्रदान करे। उन्होनें शिक्षा को मुक्ति के साधन के रुप में प्रयुक्त किया। इसी प्रकार शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र भी कहा गया "ज्ञानं मनुजस्य तृतीयं नेत्रं" अर्थात् ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, इन दो नेत्रों को देखने से जो विचार जगत छूट जाता है, वह ज्ञान रुपी तृतीय नेत्र से परिलक्षित होता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में उद्धृत किया– "बिना पढ़े नर पशु कहाय"। हमारे देश में प्रारम्भ से ही विद्या को इतना महत्व दिया गया है कि मानव जीवन के प्रारम्भिक 25 वर्ष का सर्वश्रेष्ठ समय विद्या अर्जन को समर्पित किया गया।

"प्रथम नार्जिता विद्याए द्वितीय नार्जित धनम्,
तृतीय नार्जितो धर्मः, चतुर्थे किं करिष्यति।

महत्व
उच्च शैक्षिक योग्यता युक्त सहायक अध्यापकों की आर्थिक आवश्यकताएं तो पूरी हुई किन्तु कहीं न कहीं कार्य सन्तुष्टि

बाधित हुई जब कि उच्च शैक्षिक योग्यता धारी शिक्षक अपने कार्य में दक्ष है किन्तु समायोजित नहीं है उनका यह कुसमायेाजन कहीं उनकी शिक्षण दक्षता का ह्रास तो नहीं कर रहा है? इसी समस्या के विषय में शोधार्थी ने प्रकाश डालने का कार्य किया है।

विज्ञान तथा तकनीकि के बढ़ते प्रयोग ने शिक्षा को अत्यधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। वैश्विक स्तर पर प्रत्येक राष्ट्र अन्य राष्ट्रों के साथ मिल कर शिक्षा के क्षेत्र में नित नये प्रयोग कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था भी शिक्षा को अपने सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्यों में स्थान दे रही है। अतः शिक्षा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक शिक्षक की कार्य संतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना अति आवश्यक है। वैश्विक स्तर पर इस प्रकार के अध्ययन किये जा रहे है। हमारे देश में अभी भी इस पर अध्ययन की आवश्यकता है। जिसके माध्यम से शिक्षकों के मनोबल कार्य पद्धति के सुधार एवं उन्नयन का कार्य किया जा सके।

माध्यमिक शिक्षा में बड़ी संख्या में बी0एड0 बेरोजगारों को विशिष्ट बी0टी0सी0 के नाम से नौकरी मिलने लगी तथा वेतन भी आर्कषक हो गया। वेतन के इस आकर्षण और बेरोजगारी के चलते विभिन्न विषयों मे परास्नातक एम0 एड0, एम0 फिल, एम0 टेक, एम0बी0ए0, नेट, पी0एच0डी0 आदि उच्च शैक्षिक योग्यता युक्त अभ्यर्थी सहायक अध्यापक बनने लगे।

उच्च शैक्षिक योग्यता युक्त सहायक अध्यापकों की आर्थिक आवष्यकताएं तो पूरी हुई किन्तु कहीं न कहीं कार्य सन्तुष्टि बाधित हुई जब कि उच्च शैक्षिक योग्यता धारी शिक्षक अपने कार्य में दक्ष है किन्तु समायोजित नहीं है उनका यह कुसमायेाजन कहीं उनकी शिक्षण दक्षता का ह्रास तो नहीं कर रहा है? इसी समस्या के विषय में शोधार्थी ने प्रकाश डालने का कार्य किया है।

अतः शिक्षकों की इन समस्याओं को देखकर शोधकर्ता के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि उच्च शैक्षिक योग्यता युक्त शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को देखा जाये। कार्य सन्तुष्टि उनकी शिक्षण दक्षता का एक पक्ष है। उचित कार्य सन्तुष्टि रहने पर ही शिक्षक अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा से छात्रों के विकास एवं समायोजन के लिए महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। शिक्षक अपनी पूरी उर्जा छात्रों के सर्वांगीण विकास में लगाकर देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

उद्देश्य

1. शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता (निम्न व उच्च) का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों के समायोजन (निम्न व उच्च) का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता (निम्न व उच्च) का कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शिक्षकों के समायोजन (निम्न व उच्च) का कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

सन्दर्भ

1. तिवारी, यू. (2008). *माध्यमिक स्तर अध्यापकों की शिक्षण दक्षता व शिक्षण प्रभावशीलता में सम्बन्ध का एक अध्ययन.* रा0ह0 सिंह पी0जी कालेज सिंगरामऊ जौनपुर.
2. तिवारी, जी. एन. (2001). *ए स्टडी ऑफ टीचर्स कम्पेटेंसीज एण्ड ट्रेनिंग नीड्स ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स ऑफ इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट,* रिसर्चेस एण्ड स्टडीज, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद.
3. डोन्डन, फिलिप (2008). इम्प्रूविंग लर्निंग इफीसियेन्सी फार डिजिटल माड्यूलेश कोर्सेज *एवेन्यू स्विट्ज–* 33402 टैलेन्स फ्रान्स
4. सिंह, एन. (2005). माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण दक्षता के विकास का अध्ययन. *नेशनल सेमिनार चेलेन्जेज इन टीचर एजूकेशन.*
5. शर्मा, एस. (2012). केन्द्रीय एवं प्रादेशिक माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के विद्यालयी समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. *नई शिक्षा.*
6. शर्मा, पी. (2017). माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं समायोजन का अध्ययन. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT).* 5(1),121-132.
7. शिंदे, एल. (2014). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्म संकल्पना संकाय एवं इनकी अन्तःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन. *शब्द ब्रम्ह भारतीय भाषाओं की अन्तराष्ट्रीय शोध मासिक पत्रिका,* 17 दिसम्बर.